डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर 2012 : मूल्य - पाँच रुपये

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक : आठवां | दिसम्बर-2012

4

आओ हम एक नई जिंदगी की शुरूआत करें

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा नए साल के उपलक्ष्य में एक संदेश

7

सच्चा जीवन

(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
(मुम्बई)

16

मस्ती करयो मूर्ख

(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

34

धन्य अजायब

मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन - 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 19 99

उपसम्पादक : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 0 99 28 92 53 04

अनुवादक : मास्टर प्रताप सिंह **सहयोग** : सुमन आनन्द , सुखपाल व परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in - 129 - Website : www.ajaibbani.org

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा नए साल के उपलक्ष्य में एक संदेश

आओ हम एक नई ज़िंदगी की शुरूआत करें

प्यारेयो! यह साल बीत रहा है और नया साल जल्द ही आ जाएगा, यह साल पुराना हो गया है इसे जाने दें; आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं। यह साल आप पर मेहरबान रहा लेकिन उतना मेहरबान नहीं रहा जितना इसे होना चाहिए था परमात्मा की ऐसी ही रज़ा थी।

अब आपको आने वाले नए साल में मौजूदा साल से बेहतर बनने की कोशिश करनी है। आप परमात्मा तक पहुँचने की कोशिश करें, सच्चे भक्त बनें; अपने दिल में परमात्मा को पाने की लालसा रखें और परमात्मा से दया की प्रार्थना करें। आप परमात्मा से वायदा करें कि आप रूहानियत के रास्ते पर ऊपर जाएंगे। आपको अपनी मंजिल पाने में कोई भी अड़चन नहीं आएगी।

आने वाला नया साल आपके लिए खुशियों से भरा होगा। आप रूहानियत के रास्ते में अपनी रफ्तार को धीमा नहीं करेंगे। अडिग रहें और अपनी मंजिल की तरफ बढ़ें। किसी की परवाह न करें और न किसी तरफ ध्यान दें। अपने दिल में गुरु के लिए पूरा विश्वास बनाकर अपनी मंजिल की तरफ बढ़े। जब गुरु के प्रति विश्वास कम हो जाता है तो शिष्य ठोकर खाता है, गिर जाता है। विश्वास ही हमें मंडलों से आगे ले जाता है।

मेरे लिए और जो लोग मेरे साथ परमात्मा के इस पावन उद्देश्य के लिए जुड़े हुए हैं उनके लिए इस नए साल का मतलब नई जिंदगी है। हमें इस साल में कुर्बानी देनी होगी। ये कुर्बानियां हमें भक्ति की तरफ ले जाएंगी। जब तक हम कुर्बानी नहीं करते हम भक्ति में तरक्की नहीं कर सकते।

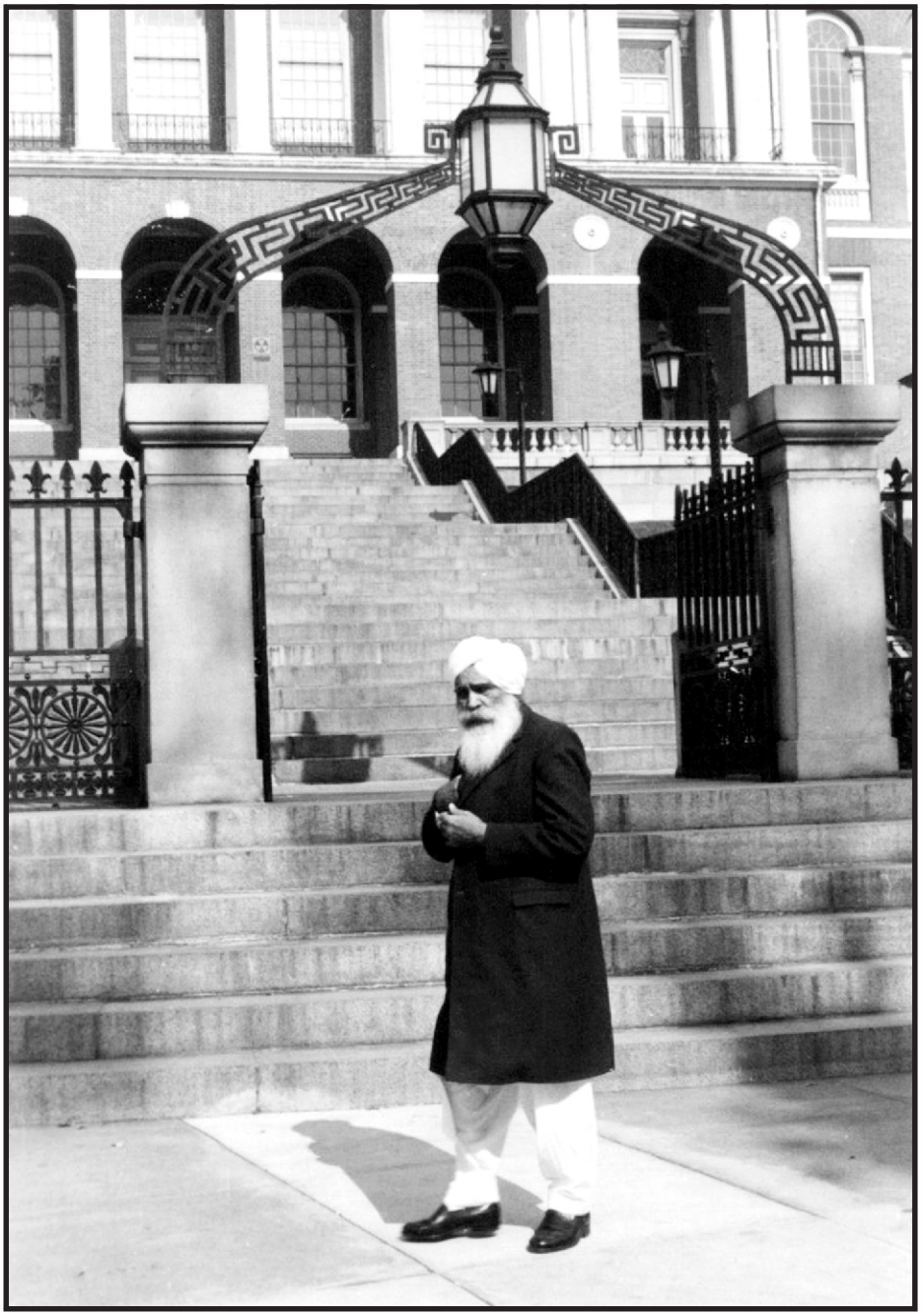

नया साल आ चुका है, नए बनें पुराना आवरण छोड़ दें। आपको जो बताया गया है उसका नियमित रूप से पालन करें। इस साल में आप यह करने में असफल रहे और दु:खी हुए; अब गलतियाँ दोहराई नहीं जानी चाहिए।

अमेरिका के पूर्व और पश्चिम में और हर जगह भक्ति के लिए एक प्रार्थना का केन्द्रीय स्थल बनना चाहिए, जहाँ 'नाम' का अमृत बरस सके और शोक से भरे हुए हजारों घायल दिलों को ठंडक पहुँचे। जो परमात्मा से दूर हैं वे दु:खी हैं। जिनका चुनाव गुरु के काम के लिए हो जाता है वे सौभाग्यशाली है।

यह नया साल बधाईयों से शुरू हो रहा है। आपका जीवन परमात्मा और गुरु की सेवा में लगा रहे। इस साल में आपका शरीर और मन गुरु प्यार मे भीग जाए।

सभी गुरुओं ने यही कहा है, ''परमात्मा प्यार है। परमात्मा प्यार में निवास करता है। हम एक-दूसरे से प्यार करें। परमात्मा के राज्य में प्यार का ही कानून है।''

आओ! हम शान्ति और प्यार से भरा नया जीवन जिएं। सबसे प्यार करें सिर्फ अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से ही नहीं पापी से भी प्यार करें। उन लोगों को भी दुआ दें जो हमें बद्आ देते हैं। हम सब मिलकर गुरु नानकदेव जी की तरह प्रार्थना करें;

तेरे भाणे सर्वद दा भला।

ढ़ेर सारे प्यार के साथ,

आपका प्यारा,

कृपाल सिंह

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चा जीवन

वारां - भाई गुरदास जी

मुम्बई

परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है। भाई गुरदास जी का एक छोटा सा शब्द आपके सामने रखा जा रहा है। सभी सतगुरुओं ने कहा है कि इंसानी जामा एक कीमती हीरा है। हमें इंसानी जामें का मौका बार-बार नहीं मिलता। जिस तरह पेड़ से पत्ते टूटकर हवा में उड़ जाते हैं वापिस पेड़ पर नहीं लगते उसी तरह हमें इंसानी जामा मिला है हम इसे खो देते हैं फिर यह इंसानी जामा वापिस नहीं मिलता।

संसार में सब हीरे की कद्र नहीं जानते। सारा संसार राग-रागनियों को सुनता है और मस्त हो जाता है लेकिन बहुत विरले ही अंदर के राग या संगीत को सुनते हैं। हमारा मन बाहर के राग को सुनकर खुश होता है लेकिन आत्मा अंदर के राग को सुनकर मस्त होती है। इसी तरह बहुत सी आत्माओं को इंसानी जामा मिला है लेकिन विरले ही **सच्चे जीवन** की कद्र करते हैं।

हम अपने बच्चों की अच्छी देखभाल करते हैं। उन्हें अच्छा खाना खिलाकर तंदरूस्त रखते हैं। बच्चा सदा बच्चा नहीं रहता वह जवान होता है और जवान सदा जवान नहीं रहता बूढ़ा हो जाता है। इसलिए इंसानी जामें की कद्र करने का यह मतलब नहीं है कि आप इसे अच्छा भोजन दें और इस शरीर का ख्याल रखें, इसका मतलब कुछ और ही है।

जब हम सतगुरुओं के सतसंग में जाते हैं तो हमें समझ आती हैं कि हमें यह इंसानी जामा क्यों मिला है? तभी हम कह सकते हैं कि हम इंसानी जन्म की कद्र कर रहे हैं।

सतगुरु हमें प्यार से समझाते हैं कि सतसंग में आकर हमने इंसानी जामें को सफल बनाना है। हमने सेवा करके अपने शरीर को पवित्र बनाए रखना है और **सच्चा जीवन** जीना है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने एक अचम्भा देखा कि बाजार में हीरे बिक रहे थे लेकिन कोई भी लेने के लिए तैयार नहीं था। हमें परमात्मा ने इंसानी जामा एक कीमती हीरा दिया है हमें इस हीरे की कद्र नहीं। कर्मकांडो में लगे हुए लोग हमें भी कर्मकांडो में लगाते हैं फिर हम चौरासी लाख योनियों में चले जाते हैं।''

मैं पिछली बार जब रोम गया, वहाँ मुझे एक पादरी मिलने के लिए आया। वह बहुत बड़ी समाज सेवा में लगा हुआ था इसलिए उसने अपनी समाज सेवा के बारे में बताया। मैं उसकी बातें सुनकर बहुत खुश हुआ। मैंने उससे पूछा, ''क्या तुमने कभी अपनी आत्मा की सेवा की है? जब मैंने उससे यह पूछा तो वह चुप हो गया। उसके पास कोई जवाब नहीं था।'' उसने कहा, ''मैं इसी बात के लिए आपके पास आया हूँ।'' उसके बाद उसने सतसंग सुना, उसका सारा परिवार नामलेवा था।

सन्तों ने सतसंग की बड़ी महिमा गाई है। सतसंग में जाकर ही हमें **सच्चा जीवन** जीने का पता चलता है। कबीर साहब भजन-अभ्यास के बाद जो समय मिलता उसमें ताना बुनकर अपनी रोजी-रोटी कमाते थे और अपनी मेहनत की कमाई संगत की सेवा में लगा देते थे।

माणस जनमु अमोलु है होइ अमोलु साधसंग पाए।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''इंसानी जामा बहुत अनमोल है। इसका हर अंग अनमोल है क्योंकि हम शरीर का कोई अंग मोल

देकर नहीं खरीद सकते। परमात्मा ने हमें शरीर के सारे अंग मुफ्त में दिए हैं। संगत की सेवा करके हम इन अंगों को अनमोल बना सकते हैं।''

एक आदमी राजा रणजीत सिंह के पास गया। राजा रणजीत सिंह की एक आँख थी। उस आदमी ने राजा से कुछ पैसे मांगे। राजा ने कहा, ''परमात्मा ने तुम्हें हाथ-पैर और पूरा शरीर दिया हैं; तुम शरीर से भी हट्टे-कट्टे हो। क्या तुम काम करके रोजी-रोटी नहीं कमा सकते? जबकि परमात्मा ने मुझे एक ही आँख दी है अगर तुम मुझे अपनी एक आँख दे दो तो मैं तुम्हें दस हजार रूपये दूँगा।'' वह आदमी डर के मारे काँपने लगा क्योंकि वह अपनी आँख नहीं खोना चाहता था। उसने सोचा अगर वह कुछ बोलेगा तो राजा उसे दण्ड दे देगा इसलिए उसने बहाने बनाने शुरू कर दिए। राजा रणजीत सिंह ने फिर कहा, ''अगर दस हजार रूपये कम हैं तो मैं तुम्हें और ज्यादा रूपये दे सकता हूँ लेकिन तुम मुझे अपनी एक आँख दे दो।''

जब राजा रणजीत सिंह ने देखा कि वह आदमी अपनी आँख नहीं देना चाहता तो राजा ने कहा, ''परमात्मा ने तुम्हें मुफ्त में पूरा शरीर दिया है जिसके बदले कुछ नहीं लिया फिर भी तुम अपने इस शरीर को परमात्मा की दया के काबिल नहीं बना रहे।''

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, '' अगर कोई पूजा-पाठ करता है, पवित्र ग्रंथ पढ़ता है लेकिन सतसंग में नहीं जाता तो यह इस तरह हैं जैसे वह साफ पानी को कीचड़ में डाल रहा हो।''

महात्मा ब्रह्मानंद कहते हैं, ''चाहे हम हजारों कर्म कर लें लेकिन सतसंग के बिना ज्ञान नहीं होता ।''

तुलसी साहब कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर कौवा भी हंस बन जाता है। हमारे अंदर कौवे वाले गुण हैं अगर हम गुरु की संगत में जाते हैं तो हमारे अंदर हंस के गुण पैदा हो जाते हैं। कौवा गंदगी पर बैठता है और हंस मोती चुगता है। हम संसार में गंदगी इकट्ठी करते हैं जब गुरु की संगत में कुछ दिन बिताते हैं तो हमारे अंदर हंस के गुण आ जाते हैं। हम भले और बुरे का फर्क आसानी से समझ सकते हैं।

सभी सन्तों ने कहा है कि परमात्मा ने हमें अनमोल शरीर दिया है, गुरु की संगत में जाकर ही हम इसकी कद्र कर सकते हैं।

अखी दुइ निरमोल का सतिगुरु दरस धिआन लिव लाए।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''जब हम अपने आपको अंदर 'शब्द' के साथ जोड़ते हैं सतगुरु के ध्यान में बैठते हैं और इन आँखो से सतगुरु का ध्यान करते हैं तो हम अपनी आँखों को अनमोल बना लेते हैं।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''एक नारी सदा ब्रह्मचारी।'' अगर पति की एक पत्नी है और पत्नी का एक पति हैं वे जीवन भर संबन्ध बनाए रखते हैं। पति को पत्नी से और पत्नी को पति से संतुष्ट होना चाहिए अगर हम दूसरों की ओर काम वासना की नजरों से देखते हैं तो हम अपनी आँखों को अनमोल नहीं बना रहे। दूसरी औरतों को माता, बेटी या बहन की नज़र से देखना चाहिए। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''उन आँखों को बंद कर देना चाहिए जो गुरु के दर्शन नहीं करती।''

भाई गुरदास जी कहते हैं कि आप गुरु के दर्शन और ध्यान करके अपनी आँखों को अनमोल बना लें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप सतगुरु के ध्यान में इतना खो जाएं कि आपको यह भी पता न चले कि आप हैं या गुरु है। जब इस तरह का ध्यान पक जाता है तो चाहे हम सो रहे हैं या जाग रहे हैं सतगुरु की मनमोहनी सूरत सदा हमारी आँखों के सामने रहती है।'' भीखनशाह कहते हैं, ''मेरी दोनों आँखें संतुष्ट हैं क्योंकि मैं चारों ओर उसी को देखता हूँ।''

महाराज सावन सिंह जी की एक भक्त महिला ने आपसे खास मुलाकात के लिए समय माँगा। जब वह महाराज सावन से मिलने गई तो आपने उससे पूछा, ''कहो काको! क्या कहना चाहती

हो? आप सदा प्यार से बेटियों को काको कहा करते थे।'' उसने कहा, ''मेरी शादी हो गई है मेरे ससुराल वाले गंगा के दर्शन के लिए गए, उन्होंने मुझे गंगा में चढ़ाने के लिए एक सिक्का दिया। मैंने वह सिक्का गंगा में चढ़ा दिया।''

महाराज सावन सिंह ने पूछा, ''फिर क्या हुआ?'' उसने कहा, ''जब मैंने वह सिक्का गंगा में चढ़ाया तो आप गायब हो गए।'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''तुम अपने कान पकड़ो और वायदा करो कि कभी गुरु का ध्यान नहीं बदलोगी।'' उसने कहा, ''आप भी वायदा करें कि आप कभी गायब नहीं होंगे।''

मसतकु सीसु अमोलु है चरण सरणि गुरु धूड़ि सुहाए।

अब भाई गुरदास जी कहते हैं, ''आप गुरु के चरणों की धूल अपने माथे पर लगाकर अपने आपको पवित्र बना सकते हैं। गुरु के चरणों की धूल अपने माथे पर वही लगाएगा जो अंदर जाता है, जिसने अंदर गुरु की चरण धूलि को पा लिया है वही प्रेमी बाहर की धूलि की कद्र करता है।''

गुरु के चरणों की धूलि के बारे में यह बात मैंने पहले भी कई बार बताई है कि जब परमात्मा कृपाल मेरे आश्रम में आए, आप चलते हुए बातें कर रहे थे तब मैंने आपके कदमों के नीचे से चरण-धूलि को उठा लिया। जब आपने यह देखा तो मुझसे पूछा, '' तुम यह क्या कर रहे हो?'' मैंने कहाः

तेरी सजरी पैर दा रेता चुक-चुक लावां हिक नूं।
ओ प्यारेया तेरे पंज शब्दां ने मैंनू तारया।

जिहबा सवण अमोलका सबद सुरति सुणि समझि सुणाए।

हम सिमरन करके अपनी जीभ को पवित्र बना सकते हैं; 'शब्द' को सुनकर अपने कानों को पवित्र बना सकते हैं।

हसत चरण निरमोलका गुरमुख मारगि से कमाए।

जब हम गुरु और संगत में चलकर जाएं और अपने हाथों से सेवा करें तभी हमारे हाथ और पैर पवित्र होते हैं।

गुरमुखि रिदा अमोल है अंदरि गुरु उपदेश वसाए।
पति परवाणै तोलि तुलाए।।

आप फरमाते हैं, ''गुरमुख का हृदय पवित्र होता है क्योंकि वहाँ शब्द प्रकट होता है। शब्द पवित्र हृदय में ही प्रकट होता है।''

मैं अक्सर कहा करता हूँ, ''एक अच्छा बेटा है, वह सारी जिम्मेवारियाँ पूरी करता है। उसका पिता सारी कमाई उसके लिए जमा करके रखता है। समय आने पर पिता ने जो कुछ कमाया होता है वह उसे दे देता है। इसी तरह जिन्होंने अपने हृदय को पवित्र बनाया होता है उनके अंदर परमपिता परमात्मा सारी बरकतें लेकर बैठ जाता है। परमात्मा के दरबार में उनकी कद्र होती है।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''परमात्मा की दरगाह में गुरुमुखों का स्वागत होता है। गुरुमुखों ने अपने जीवन को पावन और पवित्र बनाया होता है।''

सतसंगो में हमें बताया जाता है कि हम किस तरह अपनी आँखें, हाथ-पैर और शरीर के सभी अंगों को पावन और पवित्र बना सकते हैं? सन्तों ने जिंदगी में अपने सारे शरीर को पवित्र रखा होता है। वे जब परमात्मा की दरगाह में पहुँचते हैं तो वहाँ उनकी कद्र की जाती है।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर हमारा मन और शरीर पवित्र होता है तो परमात्मा की दरगाह में हिसाब चुकाना आसान हो जाता है क्योंकि वहाँ कोई आपकी मदद नहीं कर सकता।

गुरु साहब कहते हैं, ''जब गुरमुख परमात्मा के देश पहुँचते हैं तो उन्हें बैठने के लिए सिंहासन दिया जाता है, परमात्मा खुद उनका स्वागत करता है। जो लायक होता है वही सिंहासन पर बैठने के योग्य होता है। जो सतगुरु की मर्जी के अनुसार अपना **सच्चा जीवन** बना लेता है वह वही बोलता है जो सतगुरु बोलता है। वह गुरु का मुख बन जाता है।

भाई गुरुदास इस छोटे से शब्द में केवल एक ही बात कहना चाहते हैं कि सतसंग में आकर ही हमें **सच्चा जीवन** जीने का पता चलता है। परमात्मा ने हमें अमोलक इंसानी जामा दिया है, सतसंग में आकर ही हम अच्छे तरीके से जी सकते हैं।

महाराज सावन सिंह ने अपने रूहानी पुत्र कृपाल सिंह से कहा, ''चाहे आप बीमार हैं अगर आपका जरा सा भी शरीर हिलता है तो भी आपको सतसंग में जाना चाहिए।''

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंग में जाने के लिए हमें सैंकड़ो काम छोड़ देने चाहिए और भजन-अभ्यास करने के लिए हजारों काम छोड़ देने चाहिए। जब तक आप आत्मा को खुराक न दे लें तब तक शरीर को खुराक मत दें। जिस तरह तन के लिए खुराक जरूरी है उसी तरह आत्मा को भी खुराक की जरूरत है क्योंकि हमारी आत्मा युगों-युगों से भूखी और प्यासी है।''

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मस्ती करयो मूर्ख

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। वही रसना धन्य और पवित्र है जिसे गुरु का यश गाने का मौका मिल जाता है।

सन्त-महात्मा संसार में कोई कौम, मजहब या समाज चलाने के लिए नहीं आते। परमात्मा ने महात्मा के जिम्में यह काम लगाया होता है कि किन आत्माओं को प्रभु के साथ जोड़ना है, कब जोड़ना है। जिन आत्माओं का दरगाह में फैसला हो चुका होता है कि ये आत्माएं मुझसे मिलने के लिए तड़प रही हैं इससे दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता बेशक कोई आत्मा कितनी भी दूर हो जिस आत्मा को परमात्मा का हुक्म होता है उसके लिए परमात्मा जरूर अपने मिलने का कोई वसीला बनाता है। चाहे वह किसी के जरिए नामदान दे, खुद नामदान दे या उसे अपने पास बुलाए।

हम जिंदगी में अनेको वाक्यात सुनते हैं। देखते हैं कि किस तरह सन्त बहुत दूर बैठकर अपनी आत्माओं को खींचते हैं। जब परमात्मा सन्तों को संसार में भेजता है तो वे आ जाते हैं जब परमात्मा उन्हें बुला लेता है तो वे संसार से वापिस चले जाते हैं। उन्हें संसार में आने की कोई खुशी नहीं होती और वापिस जाने में कोई गम नहीं होता।

सन्त हमें प्यार से कहते हैं, ''देखो भाई! शरीर जलकर राख और मन मनूर की तरह काला हो जाता है। आत्मा पापों के बोझ

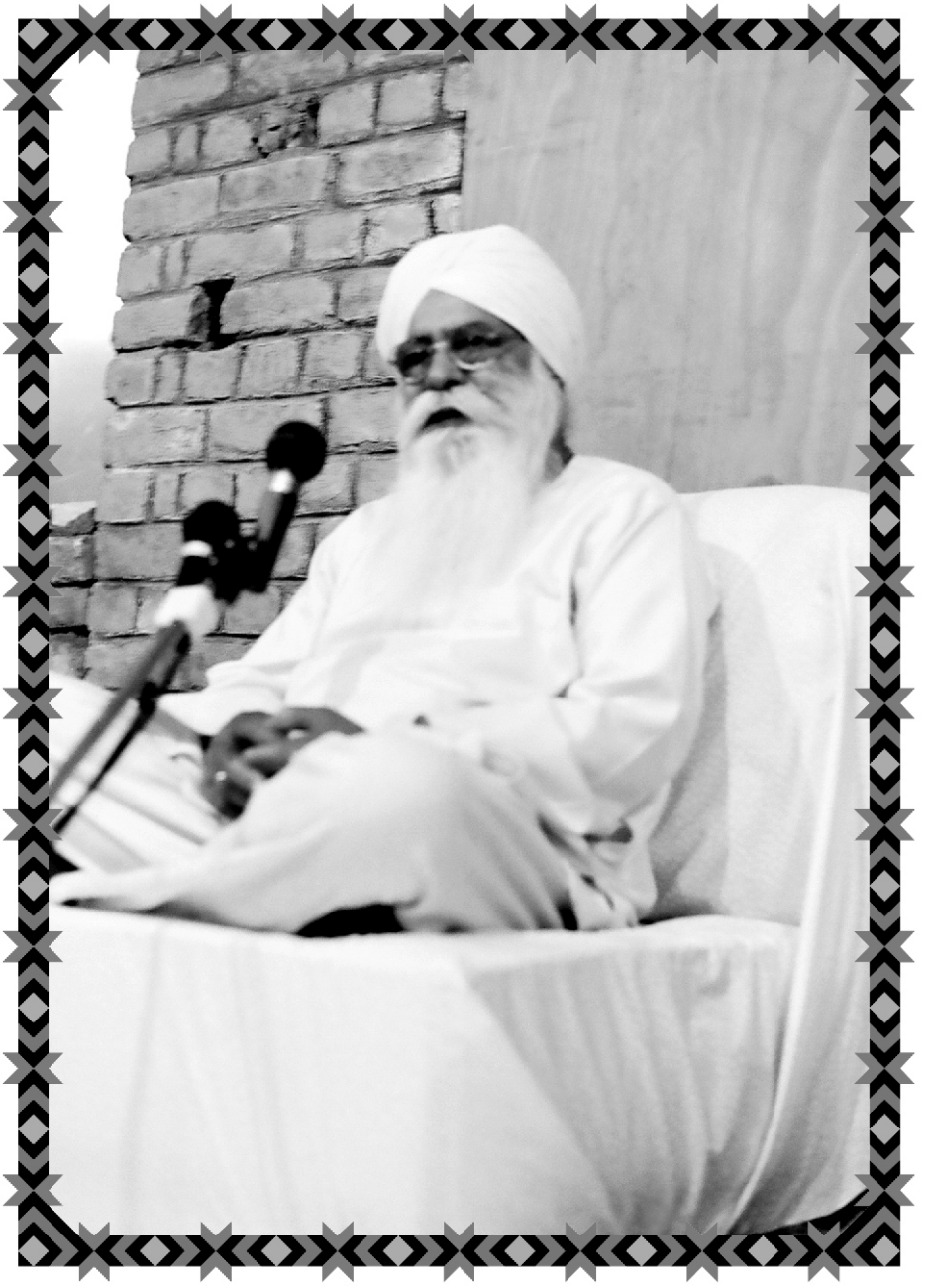

के नीचे दब जाती है, हमारे पाप जोश मारकर ऊपर आ जाते हैं। कूड़ की जीत हो जाती है, धर्मराज के दरबार में जीत के बाजे बज जाते हैं।'' दूत धर्मराज से कहते हैं कि तूने हमारी ड्यूटी लगाई थी हम इस आत्मा को पकड़कर ले आए हैं।

सन्त हमें चेतावनी देते हैं कि संसार में आकर हमने सबसे पहले यह सोचना है कि इससे पहले भी हम किसी न किसी जगह जरूर थे। यह जिंदगी बहुत छोटी है, हम बार-बार इस संसार में आते हैं और चले जाते हैं। कभी पेड़-पौधा बनते हैं, कभी जल का जीव बनते हैं तब भी इस संसार में आकर किसी न किसी योनि में चक्कर लगा रहे होते हैं।

सभी सन्त और ऋषि-मुनि इस बात को मानते हैं कि चौरासी लाख योनियां हैं। सब योनियों में चक्कर लगाकर इंसान की योनि की बारी आती है, इंसानी जामें को उत्तम कहा गया है। हम सोचते हैं कि देवी-देवता हमसे ऊँचे हैं या हमसे अच्छे हैं लेकिन देवी-देवताओं को भी परमात्मा की भक्ति का मौका नहीं मिलता।

जो आदमी यहाँ हिंसा न करे जिसके अच्छे ख्याल हों धर्म करने वाला, जीवों पर रहम करने वाला हो हम उसे देवता पुरुष कह देते है। इस संसार को कर्मभूमि कहा गया है। हम जो भी अच्छे-बुरे कर्म करते हैं उन कर्मों को भोगने के लिए संसार में आ जाते हैं। अच्छे कर्मों का ईनाम बुद्धि अच्छी होती है, अच्छे घर में जन्म हो जाता है और बीमारियों का कम सामना करना पड़ता है।

आपको ऐसा कोई इंसान नहीं मिलेगा जिसने सारी जिंदगी सुख ही सुख देखे हों! कभी दुख न देखे हों। हम जिंदगी में थोड़े बहुत सुख और थोड़े बहुत दुख भी देखते हैं। पुण्य और नेकी का

ईनाम सुख हैं। पापों की सजा बीमारी और बेरोजगारी है अगर हमारे पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्ग में होते, स्वर्ग में वही जीव जाते हैं जिनके बहुत पुण्य होते हैं लेकिन पुण्यों की भी मुनियाद है।

आप ऋषि-मुनियों के ग्रंथ पढ़कर देखें! उनमें हर देवी-देवता की आयु लिखी है फर्क इतना है कि उनकी आयु इस संसारी मंडल के जीवों से बड़ी होती हैं लेकिन उस मंडल का भी विनाश होता है। जब उनके पुण्य खत्म हो जाते हैं तो उन्हें भी इस मातलोक में आना पड़ता है। उन्हें देव योनि से सीधा इंसान का जामा मिलता है।

जब हम इंसान के जामें में आते हैं तो हमारे कुछ पुण्य और पाप इकट्ठे हो जाते हैं। पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्ग में होते अगर पाप ही पाप होते तो हम नर्क में सड़ रहे होते। जिसके ज्यादा पुण्य हैं वह ज्यादा सुखी है। जिसके ज्यादा पाप हैं वह ज्यादा दुखी है लेकिन हम सभी सुख-दुःख भोगते हैं।

मैं अपनी जिंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि जब हिन्दुस्तान अंग्रेजों की हुकूमत से आजाद हुआ उस समय हमारी आर्मी-फर्स्ट पटियाला को पहले प्रधानमंत्री को सलामी देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमें कई महीने दिल्ली के लालकिला में रहने का मौका मिला। ऐसी ईमारत में रहें तो जरूर ही ख्याल आता है कि यह ईमारत किसने बनवाई, क्यों बनवाई, किसके लिए बनवाई और आज इस ईमारत की ऐसी दुर्दशा क्यों है?

जब हम वहाँ के प्रेमियों से रोज पूछते रहे तो पता लगा कि शाहजहाँ को ईमारतें बनवाने का बहुत शौक था। शाहजहाँ ने यह लालकिला बनवाया। प्रेमियों ने बताया कि यह दीवान-ऐ-आम, दीवान-ऐ-खास है। यह नहर-ऐ-बहिश्त है यहाँ शाहजहाँ का तख्त-

ऐ-तौश था। उसे खुश करने के लिए यहाँ उसकी बेगमे नाच करती थी, नहाने वाली चीज बहुत अजीब किस्म की थी। आज तो हर घर में गीजर लगे हुए हैं, गर्म और ठंडा पानी एक-एक नल में से आता है लेकिन उस जमाने में सांईस की इतनी तरक्की न होने के बावजूद भी एक पाईप में से गर्म और दूसरे पाईप में से ठंडा पानी आता था। आजकल तो ऐसे मकान है कि सर्दी में स्विच दबाने से सारा मकान गर्म हो जाता है और गर्मी के दिनों में एयरकंडीशनर का स्विच दबाने से कमरा ठंडा हो जाता है।

मेरा आपको बताने का भाव यह है कि जब शाहजहाँ बुजुर्ग हुआ तो उसके लड़के ने ही उसे कैद कर लिया। वह अपने पिता को पूरा खाना और पानी नहीं देता था। एक दिन शाहजहाँ ने अपने बेटे को पत्र लिखा, ''बेटा! तू जिन हिन्दुओं को अच्छा नहीं समझता वे कोशिश करते हैं कि उनके मरे हुए माता-पिता को खाना-पानी मिल जाए इसलिए वे श्राद्ध करते हैं चाहे उन्हें खाना-पानी मिले या न मिले! लेकिन तेरा पिता जीते जी प्यासा है। तू जेलर को यह हुक्म दे कि वह मुझे पेट भरकर पानी पिला दिया करे।''

उस समय के इतिहास में यही लिखा हुआ मिलता है कि उसके लड़के ने शाहजहाँ को जवाब दिया कि जिस पेन से तूने यह पत्र लिखा है प्यास लगने पर इसकी स्याही चूस लिया कर। आप जानते हैं कि कैदी की क्या हालत होती है अगर कैदी पर कोई रहम करने वाला हो तो उसे कैद ही क्यों किया जाए? अब आप देखें! जो हिन्दुस्तान का बादशाह हो जिसे किसी सहूलियत की कमी न हो वह आखिरी वक्त अपने दिन जेल में बिताए कितना कष्ट है! जब मैंने यह सब सुना तो मुझे बुखार हो गया। पुण्यों का ईनाम उसे बादशाही मिली, पापों का दण्ड कैद की सजा मिली।

हम जिन बच्चों की खातिर पत्थरों के आगे शीश झुकाते हैं कि हमारे बच्चे खुश रहें शांत रहें इन्हें तंदरूस्ती मिले अगर वही बच्चा कहेकार न हो और आपके खिलाफ होकर आपको कष्ट दे एक तो उस बच्चे का दुःख और दूसरा जेल का दुःख।

हम अपनी आँखों से सुख-दुःख देखते हैं लेकिन हमारे कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। हम सोचते हैं शायद यह लोगों के साथ होता है हमारे साथ नहीं होगा। हम कभी बीमारी का सामना करते हैं और कभी तंदरूस्ती का सामना करते हैं लेकिन तंदरूस्ती में भी हम कौन सा खुश रहते हैं? उस समय हमें अनेकों चिन्ताएं लगी रहती हैं। गुरु साहब कहते हैं:

पाप पुण्य की है यह नगरिया, सो उबरे जो सतगुरु शरणईया।

हमें यह शरीर पाप-पुण्य की वजह से मिला है। जो किसी महात्मा की शरण में जाकर 'शब्द-नाम' का भेद लेकर उसे अपने जीवन का आधार बना लेता है उसका इस देह में आने का मकसद पूर्ण हो जाता है। वह उठते-बैठते, चलते-फिरते 'नाम' के साथ जुड़ जाता है फिर उसे इंतजार नहीं करना पड़ता कि अंत समय में गुरु आएगा या नहीं आएगा? प्रेमी जीते जी कह देते हैं कि गुरु आया है लेकिन शर्त यह है कि उस समय कोई बेसतसंगी पास न हो, नहीं तो वह चुप करके चला जाएगा।

दिल्ली में मोहनी जग्गी है। उसकी माता बुजुर्ग थी वह कुछ बीमार थी। मोहनी के दिल में ख्याल आया कि मैं सतसंग सुनकर आऊँ। वह जब यहाँ से जाने लगी तो मैंने उससे कहा कि बहादुर बनना है। वह जब वापिस पहुँची तो उसकी माता उसका इंतजार कर रही थी, वह मोहनी को देखकर खुश हुई। वहाँ कई रिश्तेदार भी आए हुए थे। माता ने इशारे किए कि ये रिश्तेदार थोड़ी देर के

लिए एक तरफ हो जाएं। मोहनी ने रिश्तेदारों से मिन्नतें की आप लोग थोड़ी देर के लिए बाहर हो जाएं लेकिन हम लोग भ्रम में होते हैं कि यह विधवा बूढ़ी है इसके पास पैसे होंगे जिनके बारे में यह लड़की को बताएगी। आखिर उस माता के मुँह से यही निकला 'बाबा जी'। वह इससे ज्यादा कुछ नहीं बोल सकी।

मोहनी ने मुझे सब कुछ बताया। मेरा कहने का मतलब अगर सतगुरु बाहर मौज नहीं बरताता तो इसका भाव यह नहीं कि उसकी संभाल नहीं होती। गुरु पिंड में नहीं तो अंड में जाकर संभाल करता है। गुरु अपनी आत्मा को कभी भी काल के हवाले नहीं करता। जो भजन-सिमरन करते हैं वे खुद देख लेते हैं।

सन्त-महात्माओं का मिशन बिछुड़ी आत्माओं को 'नाम' देकर प्रभु के साथ मिलाना होता है। सन्त-महात्मा हमें लड़ना नहीं सिखाते और किसी की निन्दा करने से रोकते हैं। वे संसार में आकर हमारी तरह ही शरीर में रहते हैं। वे हमारी तरह बचपन, जवानी और बुढ़ापा बिताते हैं जोकि हम देखते भी हैं।

हम यह भी देखते हैं कि सन्त-महात्मा जिस घर में जन्म लेते हैं वे उस पारिवारिक रीति-रिवाजों में नहीं फँसते। जिस काम में उनके माता-पिता फँसे होते हैं वे उनमें नहीं लगते क्योंकि उन्हें बचपन से ही परमात्मा की तरफ से ज्ञान होता है, उन पर वे चीज़े असर नहीं करती। जब हम पिता-पुरखी को छोड़ते हैं उस समय हमारे बुजुर्गों को अचम्भा होता है कि शायद हमारे लड़के का दिमाग ठीक नहीं, यह हमारा कहना क्यों नहीं मानता?

जो परमात्मा की तरफ से कोई मिशन लेकर आया है उसने तो वही काम करना है जो परमात्मा ने उसके जिम्मे लगाया है।

जब गुरु नानकदेव जी पैदा हुए तो सबसे पहले उनके माता पिता को कष्ट हुआ। उनके माता-पिता हर किसी को यही कहते कि इसे समझाएं यह दुनियादारी में अपना दिल लगाए। फिर माता-पिता ने सोचा शायद! इनके ऊपर कोई छाया हो, तावीज करने वाले को बुला लिया फिर सोचा शायद! इन्हें कोई अंदरूनी रोग हो वैद्य को बुला लिया फिर सोचा कहीं यह पिता-पुरखी न छोड़ दें पंडित को बुला लिया और पंडित से कहा कि इसे जनेऊ पहनाओ फिर सोचने लगे कि शायद! हमारे बच्चे को कोई जिन्न या भूत चिपटा हुआ है। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

कोई आखे भूतना कोई कहे बेताला, कोई आखे आदमी नानक बेचारा।

कोई कहता है कि इसे भूत चिपटा हुआ है, कोई कहता है कि इसके दिमाग के ऊपर कोई असर है, कोई कहता है कि कालू पटवारी का लड़का ऐसे ही घूमता रहता है कोई इसका ईलाज नहीं करवाता। गुरु नानक साहब कहते हैंः

भया दिवाना शाह दा।

मैं पागल नहीं हूँ। मैं तो परमात्मा का दीवाना हूँ। जिसके दिल में दर्द है वही उस दर्द को जान सकता है।

वैद्य बुलाया वेदगी पकड़ ढ़िढोले बाँह, भोला वैद्य न जाणें कर्क कलेजे माँह।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि वैद्य मेरी नब्ज पकड़कर मेरा रोग देखता है लेकिन वह नहीं जानता कि इसे क्या रोग है? अगर वह दिल का मरीज हो तो उसे पता चलेगा कि यह दिल की पीड़ा है। पंडित को बुलाया गया। पंडित ने गुरु नानकदेव जी से कहा कि आप यह जनेऊ पहनें। गुरु नानकदेव जी ने जनेऊ का खंडन नहीं किया और पंडित से कहा, ''लाओ पंडित जी! जनेऊ पहन लेते हैं

लेकिन जनेऊ के धागे जल जाएंगे मैले हो जाएंगे या टूट जाएंगे। जो चीज़ टूट जाए जल जाए हमारे साथ न जाए वह हमारी रक्षा कैसे करेगी?'' आप फिर कहते हैं:

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु।
एहु जनेऊ जीअ का हई त पांडे घतु।
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ।
धंतु सु माणस नानका जो गलि चले पाई।।
चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ।
सिखा कंनि चड़ाईआ गुर ब्राहमणु थिआ।
ओहु मुआ ओहु झाड़ि पइआ वेतगा गइआ।
तगु न इंद्री तगु न नारी।। भलके थुक पवै नित दाढ़ी।।

इंसान को परम दयावान होना चाहिए। दूसरे पर वही दया कर सकता है जिसने अपने ऊपर दया की हो। जिसके अपने घर में आग लगी हो क्या वह दूसरों के परोपकार के लिए सोच सकता है? अगर हम अपनी आत्मा पर दया करेंगे तो हमें पता लगेगा कि पशु-पक्षी सबमें वह परमात्मा है। क्या फिर हम भेड़-बकरी या किसी जानवर का कत्ल करेंगे? इस धरती पर रहने का सबको बराबर हक है लेकिन हम यह भूल जाते हैं।

परमात्मा ने हमें किस्मत के मुताबिक जो दिया है हमें उस पर संतोष होना चाहिए, किसी से ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए। शादी एक ही स्त्री के साथ होती है जितना एक स्त्री के लिए पति धर्म जरूरी है उतना ही पति के लिए भी जरूरी है।

पर त्रिया रूप न पेखे नेत्र साध की टहल सन्त संग हेत।

बुरी आँख से किसी को देखना अति गुनाह है। भाई गुरदास जी कहते हैं:

देख पराईयाँ चंगियाँ धीयां भेंणा मांवाँ जाणे।

इंसान को जति और सति होना चाहिए। वही इंसान उत्तम है जो यह जनेऊ पहनकर परमात्मा के पास दरगाह में जाते हैं। पंडित जी! अगर इस जनेऊ में इतनी सिफत है तो मेरे साथ बात करें।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि चार लड़ी का धागा घर की लड़कियाँ ही कातती है। जब हम उस धागे को गाँठ देते हैं उस दिन घर में अच्छा भोजन - खीर और प्रसाद बनाते हैं कि आज बच्चे ने जनेऊ पहनना है। ब्राह्मण बच्चे के कान में फूँक लगा देता है कि आगे के लिए ब्राह्मण तेरा गुरु हो गया।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''तेरे शरीर ने नहीं रहना इंसान मर जाता है और जनेऊ भी साथ में ही जल जाता है। परमात्मा की दरगाह में तो इंसान बे-धागा ही जाता है।'' जब महान आत्माएं इस संसार में आकर ऐसी बातें करती हैं तो हमारे माता-पिता, रिश्तेदार इन बातों को समझने की बजाय उनकी निन्दा करते हैं कि यह ठीक नहीं। ऐसा बहुत कुछ सारे सन्तों के जीवन में हुआ है।

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ अगर मेरे साथ इतना कुछ नहीं हुआ तो इससे कम भी नहीं हुआ। मेरी माता को सदा ही पछतावा रहा कि शायद मेरे बच्चे को कुछ चिपटा हुआ है, इसके ऊपर कोई छाया है! मेरे माता-पिता मुझे बाबा बिशनदास के पास ईलाज करवाने के लिए लेकर गए। बाबा बिशनदास से मुझे 'दो-शब्द' का भेद मिला। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं रात को सोता तो मेरी माता मेरे सिरहाने पानी का लोटा, चप्पल और लोहे का टुकड़ा रख देती कि भूत रात को आकर तंग न करे।

आप सोचकर देखें! क्या भूत पानी या चप्पल से डरेगा? मैं कहता कि भूत तो मन ही है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

चुप करां ता आखिए ऐह घट नाही मत।
काई गली न आवई कित्ते गल्ला झट।
ऐत्थे ओत्थे नानका करता रखे पत।

आप कहते हैं अगर मैं चुप रहता हूँ तो लोग कहते हैं कि इसे बोलना नहीं आता, इसे अक्ल नहीं है इसे कुछ चिपटा हुआ है अगर बोलता हूँ तो कहते हैं कि यह सारा दिन बड़-बड़ करता रहता है। बाहर नहीं जाता तो कहते हैं कि बेकार बैठा है अगर बाहर जाता हूँ तो कहते हैं कि ऐसे ही धक्के खाता फिरता है। कोई ऐसी गली नहीं दिखती जिसमें बैठकर अपना सिर छिपा सकूँ। आप देखें! सतसंगियों के साथ यही कुछ होता है लोग कहते हैं कि तुम कल ही सतसंग में होकर आए हो आज तुम्हें क्या हो गया? आप गुरु के आगे अरदास करें कि हमारी लाज तेरे हाथ में है।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनें:

मस्ती करयों मूर्ख जग कहया, अधिक बको तेरी लिव रहया।
भूल चूक तेरे दरबार, नाम बिना कैसे आचार।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''चुप रहते हैं तो भी दुनिया नहीं छोड़ती अगर ज्यादा बोलते हैं तो प्रभु के साथ लिव टूटती है।'' आप किसी अभ्यासी के साथ बात करके देखें! वह सिमरन में लगा रहता है अगर उसके साथ बात करें तो वह हिचकिचाता है।

महाराज सावन सिंह जी हमेशा सतसंग में यह मिसाल दिया करते थे कि मूसा को घमंड हुआ कि परमात्मा को मुझसे प्यारा कोई नहीं है। मूसा ने परमात्मा से कहा, ''क्या आपको कोई मुझसे भी ज्यादा प्यारा है?'' परमात्मा ने कहा, ''मूसा! इंसान ही नहीं जानवर, पक्षी भी मुझसे प्यार करते हैं।'' मूसा ने कहा,

''मुझे कोई सबूत दें जिससे मेरे मन को तसल्ली हो।'' परमात्मा ने कहा कि उस पेड़ पर पक्षी बैठा है तू जाकर उससे पूछ। मूसा ने कहा कि मुझे पक्षियों की बोली समझ नहीं आती। परमात्मा ने कहा तुझे समझ आ जाएगी। मूसा ने पक्षी के पास जाकर कहा, ''सुना भई! तेरा क्या हाल है, मेरे लायक कोई सेवा?'' पक्षी ने कहा, ''मूसा! मैं तेरे साथ बात तो नहीं करना चाहता क्योंकि मैं करण-कारण परमात्मा का सिमरन करता हूँ। बात करने से मेरे सिमरन में कमी आती है लेकिन तुझे उस प्यारे प्रभु ने भेजा है इसलिए मैं तेरी बात सुन लेता हूँ।'' मूसा ने कहा, ''तुझे क्या कष्ट है मुझे बता?'' पक्षी ने कहा,''तालाब यहाँ से कुछ दूर है मैं जब पानी पीने के लिए जाता हूँ तो मेरा सिमरन टूटता है, तू तालाब को नजदीक कर दे।'' मूसा ने कहा, ''मैं यह तो नहीं कर सकता।'' फरीद साहब कहते हैं:

हौं बलिहारी पंखियां जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन रब न छोडन पास।

आप कहते हैं कि मैं पक्षियों पर बलिहार जाता हूँ वे जंगल में रहते हैं, तूफान से बचाव नहीं कर सकते। गर्मी से बचने के लिए एयरकंडीशनर नहीं लगा सकते फिर भी परमात्मा का सिमरन नहीं छोड़ते। हम सोए होते हैं पक्षी हमसे पहले उठ जाते हैं हाँलाकि उन्हें अच्छा खाना नहीं मिलता, सोने के लिए अच्छा मकान नहीं मिलता। भगवान ने हमें अच्छे खाने, अच्छे मकान और अच्छे बिस्तर दिए हैं लेकिन हम खाकर सो जाते हैं प्रभु को याद तक नहीं करते। 'नाम' की कमाई ही हमें निर्मल करती है।

ऐसे झूठ मुठे संसारा निन्दक निन्दे मुझे प्यारा।

आप प्यार से कहते हैं, ''दुनिया झूठ की पुजारी है। जो मेरी

निन्दा करता है वह मुझे बहुत प्यारा है। मैं उसके प्यार का बदला नहीं चुका सकता। निन्दक दूसरे के पापों की मैल अपने सिर पर लेकर उसका भार हल्का कर देता है।'' कबीर साहब कहते हैंः

निन्दक हमरे कपड़े धोऐ।

महाराज सावन कहा करते थे, ''भूलकर भी किसी की निन्दा न करें। निन्दा करने से उसके पाप आपके खाते में जमा हो जाएंगे और आपके पुण्य उसको मिलेंगे। हर इन्द्री में कोई न कोई लज्ज़त है लेकिन निन्दा न मीठी है। न फीकी है। न चटपटी है फिर भी हमें इसकी लत लगी हुई है। हम दूसरे की निन्दा शुरू कर देते हैं कि उसमें यह ऐब है वह ऐब है।''

दोख पराया देखकर चलत हँसत हँसत।
आपदा कबहूँ न देखया जिसका आदि न अंत।

हम दूसरे की कमियाँ देखकर खुश होते हैं और अपनी कमी की तरफ नहीं देखते; आगा दिखता है पीछा चौड़ है।

जब सन्त संसार में आते हैं तो उन्हें विरोध का सामना करना पड़ता है। सामाजिक लोग उनकी निन्दा करते हैं क्योंकि उनके भाग्य में सतसंग, नाम और महात्मा के दर्शन नहीं लिखे होते। वे सारा दिन अनेकों झूठी कहानियाँ सुनाते रहते हैं लेकिन सन्त उनके साथ भी प्यार करते हैं। सन्त कहते हैं कि इनमें भी आत्मा है। आत्मा परमात्मा की अंश है आत्मा निर्दोष है, बुराई मन के अंदर है। सन्तों की नज़र आत्मा पर होती है वह निन्दक के साथ भी प्यार करते हैं।

आप महात्मा जयदेव की कहानी पढ़कर देखें! उन्हें जंगल में भक्ति करते हुए डाकुओं ने पकड़कर उनकी दोनों बाजू काट दी।

मालिक सबका रक्षक है। एक बादशाह ने सोचा कि यह एक महात्मा आदमी है इसे महल में ले चलें यह वहाँ भक्ति करेगा। जयदेव बादशाह के साथ महल में चले गए। जब उन कातिल डाकुओं को पता लगा कि जयदेव एक राजा के पास रहता है; कहीं वह राजा से हमारी चुगली करके हमें पकड़वा दे तो हमें बहुत कष्ट होगा क्योंकि पापी आत्मा को अपने अंदर ही डर लगा रहता है।

एक दिन वे चारों डाकू भगवे कपड़े पहनकर महात्मा का रूप धारण करके राजदरबार में चले गए। पहले जमाने में महात्मा लोगों का राजदरबार में बहुत आदर-मान होता था। डाकुओं ने कहा कि हमने जयदेव से मिलना है। उन्होंने सोचा कि ये भी महात्मा हैं उन्हें जयदेव से मिलवा दिया। जयदेव ने उन डाकुओं को पहचान लिया। जयदेव ने उन डाकुओं का बहुत आदर किया कि इन्होंने मेरे बाजू काटकर मुझे सजा दी तभी मैं राजा के पास आया। यहाँ राजदरबार में मेरी अच्छी परवरिश हो रही है मुझे भजन का मौका मिला है, लोग मुझे परेशान नहीं करते।

जयदेव ने उन डाकुओं का बहुत आदर किया और कहा कि ये बहुत अच्छे महात्मा हैं। कुछ समय रहकर जब डाकू वापिस जाने लगे तो अहलकार उन्हें छोड़ने के लिए गए। अहलकारों ने कहा कि राजा जयदेव को धर्म गुरु मानता है लेकिन जयदेव ने आपका बहुत आदर किया। आप लोग तो उनसे भी ज्यादा चढ़ाई करते होंगे। डाकुओं ने कहा कि इसमें भी राज है। अहलकारों ने पूछा कि क्या राज है? डाकुओं ने कहा कि जब हम जवान अवस्था में थे हम डाका डालते थे, जयदेव उसमें पकड़ा गया। राजा ने जयदेव को सजा दी इसकी बाजूएं कटवा दी। जयदेव डर के मारे हमारा आदर करता है कि कहीं हम इसकी पोल न खोल दें। हम तो पहले भी

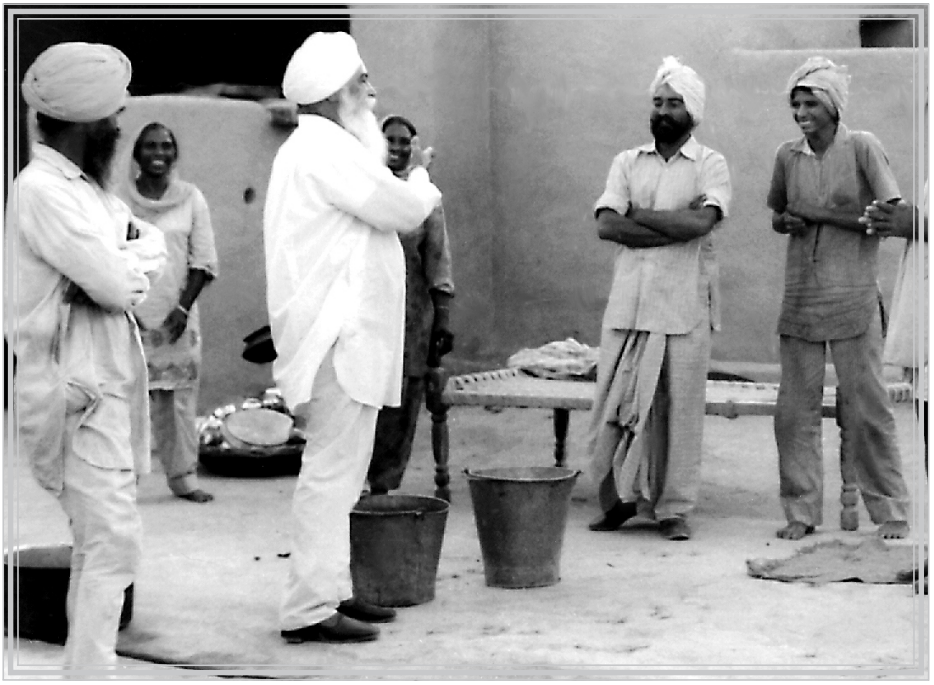

महात्मा थे आज भी महात्मा है। हमारे दिल में ख्याल आया कि चलो जयदेव से मिल आए। अहलकारों ने जब जयदेव के पास आकर उसे यह कहानी बताई कि आपने तो उन महात्माओं का इतना आदर किया लेकिन वे तो यह सब बताकर गए है।

यह सुनकर महात्मा जयदेव बहुत मायूस हुए कि मैंने इन लोगों की इतनी सेवा की। जयदेव ने अफसोस करते हुए परमात्मा से कहा कि हे परमात्मा! इन पर रहम कर। जयदेव अपने टुंड मलने लगे तो उनके हाथ साबुत हो गए। महात्मा जयदेव का शब्द गुरु ग्रंथ साहब में आता है, आप परमगति को प्राप्त हुए थे।

अगर निन्दक भूल से भी सन्तों के दरबार में आ जाए तो भी सन्त उसका आदर करते हैं कि यह अच्छी तरफ लग जाए लेकिन निन्दक वहाँ जाकर भी कोई न कोई कमी ही ढूंढता है।

जिस निन्दे सोई बिध जाणें, गुर के शब्दे गर निशाणे।

जिन पर परमात्मा कृपा करता है उन्हें किसी महात्मा की सोहबत-संगत में ले जाता है। वे 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं।

कारण नाम अंतरगत जाणें, जिसनों नदर करे सोई बिध जाणे।

करण-कारण परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है कि मैंने किसको नाम की भक्ति में लगाना है, किसके अंदर नाम की इच्छा पैदा करनी है और किसके साथ मिलना है।

मैं मैं लौ उज्जल सच सोए, उद्यम आख न ऊचा होए।

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर हम किसी को ऊँचा-ऊँचा कहते रहें तो वह ऊँचा नहीं होता; ऊँचा बनने के लिए ऊँचे गुण धारण करने पड़ते हैं।''

मनमुख भूल महा बिख खाहे, गुरुमुख होए सो रासे नाए।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''गुरुमुख अंदर जाकर 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं, नाम का अमृत पीते हैं। मनमुख बाहर भी विषय-विकारों की जहर खाते हैं और अंदर जाकर भी विषय-विकारों की जहर खाते हैं क्योंकि उनकी अंदर चढ़ाई नहीं होती। वे नीचे भूत-प्रेतों के मंडल में ही दुखी होते हैं।''

अंधो बोलो मुगध गवार हीणों नीच बुरो बुरयार।

आप कहते हैं, ''हम अंधे, बहरे, लूले और लंगड़े हैं। परमात्मा सच्चखंड में बैठा है। हमें वह आँखे नहीं मिली इसलिए हम परमात्मा को जंगलो, पहाड़ो, मंदिरो में ढूंढ रहे हैं, महात्मा अंदर हमारी आँखे खोलते हैं। परमात्मा की आवाज दिन-रात हमारे कानों में आ रही है लेकिन हम उस आवाज को अंदर सुनने की बजाय बाहर बाजे बजाने में लगे हुए हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

मुल्ला मनारे क्या चढ़े साँई न बहरा होय।
जां कारण तू बांग दे दिल ही भीतर जोय।

क्या परमात्मा बहरा है? हम उसे ऊँची-ऊँची आवाज देकर पुकार रहे हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

कोई गावे रागी नागी बेदी बहु भात करनी हर हर भीजे।

आप चाहे जितनी मर्जी राग-रागनियां गा लें! परमात्मा आपकी छोटी से छोटी आवाज को भी सुनता है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''परमात्मा हाथी की आवाज बाद में सुनता है चींटी की आवाज पहले सुन लेता है।'' क्या परमात्मा सोया हुआ है, हम बाजे बजाएंगे तो ही परमात्मा को जाग आएगी? गुरु रामदास कहते हैं:

अमृत हर हर नाम है मेरी जिंदड़िए, मन सुक्या हरया होवे राम।

वह अमृत हर एक के अंदर बरस रहा है और हम उस अमृत की खोज बाहर करते हैं। हमारा मन विषय-विकारों की वजह से खुष्क हो चुका है जब आत्मा अमृत पीती है तो वह तर हो जाता है। जिस तरह हम सूखे पेड़ को पानी देते हैं तो वह हरा हो जाता है उसमें पत्ते निकल आते हैं, यही हमारे मन की हालत है।

अमृत रस सतगुरु चुवाया, दसवें द्वार प्रकट होय आया।
अमृत खूँटा अमृत भरया, शब्दे काड पिए पनिहारी।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आपके अंदर अमृत का कुँआ लगा हुआ है। जब आप स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर ऊपर दसवें द्वार में पहुँचेंगे तो आपको वह अमृत मिलेगा।'' जिस तरह लड़कियां डोरी से कुंए में से पानी निकालती हैं उसी तरह जब आत्मा शब्द की डोरी को पकड़ लेती है तो हम उस अमृत को प्राप्त कर लेते हैं। हमारी देह अमृत का चश्मा है लेकिन हमारी

हालत उस मृग जैसी है कस्तूरी उसकी नाभि में होती है वह फिर भी झाड़ियों में भटकता फिरता है क्योंकि वह नहीं जानता कि यह महक मुझमें से ही आ रही है।

निर्धन को धन नाम प्यार, ऐह धन सार उर बिखया क्षार।

नाम अज्ञानता का अंधेरा दूर कर देता है। नाम प्रकाश है। नाम निर्धनों का धन है। बे-आसरो का आसरा है। जिसने नाम का आसरा ले लिया उसने प्रभु का आसरा ले लिया। प्रभु ही नाम है। नाम प्रभु की शक्ति है जिसने उस शक्ति का आसरा ले लिया उसे सारे ही आसरे मिल गए। नाम सच्चा धन है इसे चोर चुरा नहीं सकते। अग्नि जला नहीं सकती, हवा उड़ा नहीं सकती। बाकी जो भी धन हम इकट्ठे करते हैं वे क्षार हैं स्वाह हैं यहीं रह जाएंगे।

उसतत निन्दा शब्द विचार, जो दे वे तिसको जयकार।
तूं बक्शे जात पत होय, नानक कहे कहावे सोय।

गुरु नानक साहब ने हमें बहुत प्यार से बताया है कि हम अपना बहुत सा समय किसी की निन्दा में, कभी किसी की बड़ाई करने में बर्बाद करते हैं। हमें वह समय सिमरन में लगाना चाहिए। नाम के बिना हम सब नीची जाति वाले हैं। वही ऊँची जाति वाला है जिसकी आत्मा में नाम बस जाता है।

गुरु नानक साहब ने हमें बहुत प्यार से इस छोटे से शब्द में समझाया है कि नाम के क्या फायदे हैं हमने नाम क्यों प्राप्त करना है? हम गुरु के नाम के साथ जुड़कर अपनी आत्मा को वापिस सच्चखंड ले जा सकते हैं। जो अपने आप पर दया करता है वह दूसरों पर भी दया कर सकता है। हमें भी चाहिए कि परमात्मा की भक्ति करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 9 जनवरी से 13 जनवरी 2013 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में नम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067
फोन - 098 33 00 4000

भजन-सिमरन और सतसंग के कार्यक्रमों की अधिक जानकारी के लिए www.ajaibbani.org पर अपना नाम रजिस्टर करें।